८३. और जब वह रसूल की तरफ़ उतारे हुए (पैग़ाम) सुनते हैं, तो आप उनकी आखों से बहते आँसू की धारा को देखते हैं, इस वजह से कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया, वह कहते हैं हे हमारे रब! हम मुसलमान हो गये, बस तू हमें भी गवाहों में लिख ले।

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿83﴾

८४. और हमें क्या है कि अल्लाह और उस सच्चाई पर यक़ीन न करें जो हमारे पास आया है और यह उम्मीद न करें कि हमारा रब हमें सालिहीन में शामिल कर देगा।

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ﴿84﴾

८५. तो अल्लाह ने उनकी इस दुआ के सबब ऐसे बाग़ दिये जिन के नीचे नहरें जारी हैं, जिस में हमेशा रहेंगे और यही नेक लोगों का बदला है।

فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿85﴾

८६. और जो काफ़िर हो गये और हमारी आयतों को झुठला दिये वही जहन्नमी हैं।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿86﴾

८७. हे ईमानवालो! उन पाक चीज़ों को हराम न बनाओ जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल बना दिया[1] और ज़्यादती न करो, बेशक अल्लाह ज़्यादती करने वालों से प्यार नहीं करता।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿87﴾

८८. और अल्लाह (तआला) ने जो चीज़ें तुम्हें दी हैं उन में से पाकीज़ा हलाल चीज़ें खाओ और अल्लाह तआला से डरो, जिस पर तुम ईमान रखते हो।

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿88﴾

[1] हदीस में आता है कि एक आदमी नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहने लगा हे रसूलुल्लाह ﷺ! जब मैं गोश्त खाता हूँ तो जिमाअ की इच्छा (ख़्वाहिश) ज़्यादा हो जाती है, इसलिए मैंने अपने ऊपर गोश्त हराम कर लिया है, जिस पर यह आयत उतरी। (सहीह तिर्मिज़ी, अलबानी, भाग ३, पेज ४६)

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ۭ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ۭ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿89﴾

८९. अल्लाह तआला तुम्हारी क़समों में बेकार क़समों पर तुम को नहीं पकड़ता, लेकिन पकड़ उसकी करता है तुम जिन क़समों को मज़बूत कर दो,[1] उसका कफ़्फ़ारा दस गरीबों को खाना देना है औसत दर्जे का, जो अपने घरवालों को खिलाते हो,[2] या उनको कपड़ा देना,[3] या एक ग़ुलाम या लौण्डी आज़ाद करना है,[4] और जिस से यह न हो सके वह तीन दिन रोज़े रखे।[5] यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जबकि तुम क़सम खा लो और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त

---

[1] क़सम को अरबी ज़ुबान में हलफ़ या यमीन कहते हैं, जिनका बहुवचन (जमा) अहलाफ़ और ऐमान है। क़सम की तीन क़िस्में हैं : (१) लग्व (२) ग़मूस (३) मोअक्कद। (१) लग्व वह क़सम है जो इंसान बात-बात पर आदतन बिना किसी वजह और मक़सद के खाता रहता है, इस में कोई पकड़ न होगी। (२) ग़मूस वह झूठी क़सम है जो इंसान धोखा देने या छल के लिए खाता है, यह बहुत बड़ा गुनाह है, लेकिन इस का कोई कफ़्फ़ारा नहीं है। (३) मोअक्कद वह क़सम है जो इंसान अपनी बात में ज़ोर और पुख़्तगी के लिए जानबूझ कर खाये, इस तरह की क़सम को अगर तोड़ेगा तो उसका वह कफ़्फ़ारा अदा करेगा, जिसका आगे आयत में बयान है।

[2] इस खाने की तादाद के लिए कोई एक सही क़ौल नहीं है, इसलिए इख़्तिलाफ़ है, लेकिन इमाम शाफ़ई ने उस हदीस से दलील देते हुए, जिस में रमज़ान में रोज़े की हालत में बीवी से जिमाअ करने का जो कफ़्फ़ारा है, लगभग आधा किलो हर ग़रीब का खाना मुक़र्रर किया है, क्योंकि नबी ﷺ ने उस इंसान को बीवी के साथ रोज़े की हालत में जिमाअ करने के कफ़्फ़ारा के तौर पर १५ साअ खजूरें दिलवायी थीं, जिन्हें साठ ग़रीबों में बाँटा गया था, एक साअ में चार मुद्द और एक मुद्द (लगभग छः सौ ग्राम होता है) इस बिना पर बिना शोरबे के सालन के दस ग़रीबों को देने के लिए दस मुद्द (यानी छः किलो) खाना कफ़्फ़ारा होगा। (इब्ने कसीर)

[3] कपड़े के बारे में भी इख़्तिलाफ़ है, ज़ाहिरी तौर से मुराद कपड़े का जोड़ा है जिसमें इंसान नमाज़ पढ़ सके, कुछ आलिमों ने खाना और कपड़ा दोनों के लिए रीति और रिवाज को विश्वस्त (मोतबर) माना है।

[4] कुछ आलिमों ने चूक से क़त्ल के कफ़्फ़ारा पर हिसाब करके दास और दासियों के लिए ईमान का प्रतिबन्ध (शर्त) लगाया है। इमाम शौकानी कहते हैं, आयत आम है जिस के अन्दर मोमिन और काफ़िर दोनों आते हैं।

[5] यानी जिस इंसान को ऊपर के तीनों विषयों में से किसी की ताक़त न हो वह तीन दिन रोज़ा रखे, कुछ आलिम लगातार रोज़े (व्रत) रखने के हक़ में हैं और कुछ के ख़्याल से दोनों जायेज़ हैं।

करो, इस तरह अल्लाह तआला तुम्हारे लिए अपने हुक्मों को बयान करता है, ताकि तुम शुक्रिया अदा करो।

يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (90)

९०. हे ईमानवालो! शराब, जुआ और मूर्तियों की जगह और पांसे गन्दे शैतानी काम हैं, इसलिए तुम इस से अलग रहो ताकि कामयाब हो जाओ।[1]

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ (91)

९१. शैतान चाहता ही है कि शराब और जुआ के जरिये तुम्हारे बीच दुश्मनी और हसद डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज से रोक दे तो तुम रुकते हो या नहीं।[2]

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ (92)

९२. और अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल की इताअत करो और होशियार रहो और अगर तुम ने मुँह फेरा तो जान लो कि हमारे रसूल पर खुला संदेश (पैगाम) पहुँचा देना है।

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ (93)

९३. ऐसे लोगों पर जो ईमान रखते हों और नेकी का काम करते हों, उस चीज में कोई गुनाह नहीं जिस को वह खाते-पीते हों, जबकि वह लोग अल्लाह से डरते हों और ईमान रखते हों और नेकी का काम करते हों, फिर परहेजगारी करते हों और ईमान रखते हों फिर परहेजगारी करते हों और बहुत ज़्यादा नेकी का काम करते हों, अल्लाह ऐसे नेक काम करने वालों से मुहब्बत करता है।

---

[1] यह शराब के बारे में तीसरा हुक्म है। पहले दो हुक्मों में उसे वाजेह तौर से हराम नहीं किया गया है, लेकिन यहाँ उस के साथ जुआ, इबादतगाहों या थानों और शगुन के तीरों को बुरा और शैतानी काम एलान करके वाजेह लफ्ज़ों में इन सभी से महफ़ूज रहने का हुक्म दे दिया गया है।

[2] यह जुआ और शराब के दूसरे सामाजिक और दीनी नुकसान है, जिन के बयान की जरूरत नहीं, इसी वजह से शराब को सभी बुराईयों की माँ कहा जाता है और जुआ भी ऐसी ही बुरी लत है, यह इंसान को किसी काम का नहीं रखता और ज़्यादातर धनवानों और खानदानी जागीरदारों को भीखारी और दरिद्र बना देता है, अल्लाह दोनों से महफ़ूज रखे।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗۤ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿94﴾

९४. हे ईमानवालो! अल्लाह (तआला) कुछ शिकार के जरिये तुम्हारा इम्तेहान लेता है,[1] जिन तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे भाले पहुँच सकेंगे ताकि अल्लाह (तआला) मालूम कर ले कि कौन इंसान उस से बिना देखे डरता है, जो इंसान इस के बाद हद से बढ़ जायेगा उसे सख़्त सजा है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًۢا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿95﴾

९५. हे ईमानवालो! जब तुम (हज या उमर: का) एहराम की हालत में रहो तो शिकार न करो और तुम में से जो भी जान बूझ-कर उसे मारे[2] तो उसे फ़िदिया देना है उसी के समान,[3] पालतू जानवर से जिसका फ़ैसला तुम में से दो आदिल करेंगे जो क़ुर्बानी के लिये कअबा तक पहुँचाया जायेगा या फ़िदिया के तौर पर मिस्कीनों को खाना देना है या उस के बराबर रोज़े (व्रत) रखना है ताकि अपने किये की सज़ा चखो, जो पहले हो चुका अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया और जो इस (मना के हुक्म) के बाद ऐसा फिर करेगा अल्लाह उस से बदला लेगा, अल्लाह ताक़तवर बदला लेने वाला है।

---

[1] शिकार अरबों के जिन्दगी गुज़ारने का एक ख़ास जरिया था, इसलिए एहराम की हालत में इसे हराम करके उनका इम्तेहान लिया गया, ख़ास तौर से हुदैबिया में रहने के वक़्त शिकार ज़्यादा सहाबा के नजदीक आते, लेकिन उन्हीं दिनों में यह चार आयतें उतरीं, जिस में उस से मुतअल्लिक हुक्म दिये गये।

[2] "जान-बूझ कर" के कलिमा से कुछ आलिमों ने यह दलील निकाली है कि बिना कोशिश के अगर भूल से अंजाने में क़त्ल हो जाये तो उस में फ़िदिया नहीं है, लेकिन ज़्यादातर आलिमों के नजदीक मर्जी और ग़ैर मर्जी दोनों हालतों में जानवर क़त्ल करने पर फ़िदिया देना होगा, जान-बूझ कर की बात हालतों के हिसाब से है शर्त की के शक्ल में नहीं है।

[3] बराबर जानवर से मुराद फ़ितरी यानी जिस्म और दर्जे में बराबर होना है, क़ीमत में बराबर होना नहीं है, जैसाकि अगर हिरण का क़त्ल हुआ तो उसके बराबर बकरी है, गाय के बराबर नील गाय है आदि। लेकिन जिस जानवर का बराबर नहीं मिल सकता हो, वहाँ उस क़ीमत के तौर पर फ़िदिया लेकर मक्का पहुँचा दिया जायेगा। (इब्ने कसीर)

९६. तुम्हारे लिए समुन्दर का शिकार पकड़ना और खाना हलाल किया गया है ।[1] तुम्हारे इस्तेमाल के लिए और मुसाफिरों के लिए, और ख़ुश्की का शिकार हराम किया गया जब तक तुम एहराम की हालत में हो, और अल्लाह (तआला) से डरो जिस के पास जमा किये जाओगे ।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۖ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾

९७. अल्लाह ने कअबा को जो हुरमत वाला घर है, लोगों के लिये क़ायम रहने का सबब बनाया और हुरमत वाले महीने को और हरम में क़ुर्बानी दिये जाने वाले जानवरों को भी और उन जानवरों को भी जिन के गले में पट्टे हों ।[2] यह इसलिए ताकि तुम इस बात पर यक़ीन कर लो कि बेशक अल्लाह (तआला) आसमानों और ज़मीन के अन्दर की चीज़ों का इल्म रखता है और बेशक अल्लाह सभी चीज़ को अच्छी तरह जानता है ।

جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَٰلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾

९८. तुम यक़ीन करो कि अल्लाह तआला सज़ा भी सख़्त देने वाला है और अल्लाह (तआला) बड़ा बख़्शने वाला और बहुत रहम करने वाला भी है ।

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٨﴾

९९. रसूल का फ़र्ज़ तो सिर्फ़ पहुँचाना है और अल्लाह (तआला) सभी कुछ जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छिपा रखते हो ।

مَّا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾

---

[1] صَيْدُ (सैद) से मुराद ज़िन्दा जानवर और طَعَامُهُ (तआमुहू) से मुराद मुर्दा (मछली वग़ैरह) है जिसे समुद्र या नदी बाहर फेंक दे या पानी के ऊपर आ जाये, जिस तरह से हदीस में वाज़ेह तौर से कहा गया है कि समुद्र का मुर्दा जानवर हलाल है । (तफ़सीली जानकारी के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर, और नैनुल औतार वग़ैरह)

[2] कअबा को बैतुल-हराम इसलिए कहा जाता है कि उस के हद के अन्दर शिकार करना, पेड़ काटना वग़ैरह हराम है, इसी तरह अगर इस में बाप के क़ातिल से भी सामना हो जाये तो उसे छेड़ा नहीं जाता था ।

قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿100﴾

१००. आप कह दीजिए कि नापाक और पाक बराबर नहीं, अगरचे आप को नापाक की ज़्यादती अच्छी लगती हो, अल्लाह (तआला) से डरते रहो, हे अक़्लमंदो! ताकि तुम कामयाब हो।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿101﴾

१०१. हे ईमानवालो ! ऐसे विषय में सवाल न करो कि जिसे ज़ाहिर कर दिया जाये तो तुम्हें बुरा लग जाये और अगर क़ुरआन उतारे जाने के वक़्त सवाल करोगे तो तुम्हारे ऊपर ज़ाहिर कर दिया जायेगा,[1] जो हो चुका अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया और अल्लाह बख़्शने वाला सहन करने वाला है।

قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿102﴾

१०२. तुम से पहले कुछ लोगों ने यही सवाल किया फिर उन के इंकारी हो गये।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿103﴾

१०३. अल्लाह ने हुक्म नहीं दिया है बहीर: की न साएब: की न वसील: की न हाम की[2] लेकिन काफ़िर अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम लगाते हैं और उन में ज़्यादातर अक़्ल नहीं रखते।

---

[1] यह निषेधाज्ञा (मम्नुअत) क़ुरआन के उतरने के वक़्त थी, ख़ुद नबी ﷺ भी सहाबा को ज़्यादा सवाल करने से रोकते थे। एक हदीस में आप ﷺ ने फ़रमाया : "मुसलमानों में सब से बड़ा गुनहगार वह है जिस के सवाल करने के सबब कोई चीज हराम हो गयी, जबकि उससे पहले वह हलाल थी।"

[2] यह उन जानवरों की क़िस्में हैं जो अरबवासी अपनी मूर्तियों के नाम पर आज़ाद करते थे, इनकी कई तफ़सीरें की गयी है। हज़रत सईद बिन मुसय्यिब के क़ौल के मुताबिक़ सहीह बुख़ारी में इसकी तफ़सीर निम्न रूप से संकलित की गयी है। **बहीर**:- वह जानवर है जिसका दूध दूहना छोड़ दिया जाता था और कहा जाता था कि यह मूर्तियों के लिए है, इसलिए कोई भी इंसान उस के थनों को हाथ नहीं लगाता। **साएब**: वह जानवर जिन्हें वे मूर्तियों के नाम पर छोड़ देते उन पर न सवारी करते न माल लादते, जैसे छुट्टे सांड। **वसील**:- वह ऊँटनी जिससे सब से पहले मादा पैदा होती और फिर दूसरी बार भी मादा होती (यानी एक मादा के बाद दूसरी मादा हुई और किसी नर के पैदा न होने के सबब बीच में भेद न हुआ) तो ऐसी ऊँटनियों को भी मूर्तियों के नाम आज़ाद छोड़ दिया करते थे और **हाम**- वह नर ऊँट है जिसके ज़रिये उसकी नस्ल से कई ऊँट पैदा हो चुके होते हैं, तो उनको भी मूर्तियों के नाम पर छोड़ देते, उससे भी सवारी और भार वाहन का काम नहीं लेते और हामी पशु कहते।

१०४. और जब उन से कहा गया कि उस (पाक क़ुरआन) की ओर रसूल (मुहम्मद ﷺ) की तरफ़ आओ तो उन्होंने कहा कि जिस (रीति) पर हम ने अपने बुज़ुर्गों को पाया है वह हमें बस है, अगरचे उन के बुज़ुर्ग कुछ न जान रहे हों और सही रास्ते पर न हों।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۚ أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿104﴾

१०५. हे ईमानवालो! अपनी फ़िक्र करो, जब तुम सच्चे रास्ते पर चल रहे हो तो जो इंसान भटक जाये उस से तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं, अल्लाह ही के पास तुम सभी को जाना है, फिर वह तुम सब को बतला देगा जो कुछ तुम करते थे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ ۖ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ۚ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿105﴾

१०६. हे ईमानवालो! जब तुम में किसी की मौत का वक़्त हो तो वसीयत के वक़्त तुम में से दो आदिल इंसान को गवाह होना चाहिये[1] या तुम्हारे सिवाये दो अन्य को अगर तुम ज़मीन में सफ़र कर रहे हो और तुम पर मौत की मुसीबत आ जाये,[2] (शक की हालत में) तुम दोनों (गवाहों) को (जमाअत की) नमाज़ के बाद रोकोगे फिर दोनो अल्लाह की क़सम लेंगे कि हम इस (गवाही) के बदले कोई क़ीमत नहीं लेना चाहते[3] अगरचे वह क़रीबी हो और हम अल्लाह

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ الْمَوْتِ ۚ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ ﴿106﴾

---

1 "तुम में से हों" का मतलब कुछ ने यह लिया है कि मुसलमानों में से हों, और कुछ ने कहा है कि مُوْصِي (वसीयत करने वाले) की क़ौम के हों, इसी तरह (آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ) में दोनों मतलब होंगे, यानी مِنْ غَيْرِكُم से मुराद जो मुसलमान न हों (अहले किताब) होंगे या उत्तरदान कर्ता की क़ौम के सिवाय दूसरी क़ौम से।

2 यानी सफ़र में ऐसा रोग हो जाये जिससे बचने की उम्मीद न हो तो वह सफ़र में दो आदिल गवाह बनाकर जो वसीयत करना चाहे कर दे।

3 अगर मरने वाले के वारिस को यह शक हो जाये कि गवाहों ने ख़ियानत की या फेर-बदल किया है, तो वह नमाज़ के बाद यानी लोगों की मौजूदगी में उन से क़सम लें और वह क़सम खाकर कहें कि हम अपनी क़सम के बदले दुनिया का कोई फ़ायेदा नहीं हासिल कर रहे हैं यानी झूठी क़सम नहीं खा रहे हैं।

की गवाही नहीं छुपा सकते, अगर ऐसा करेंगे तो हम दोषी हैं।

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰٓ أَنَّهُمَا ٱسْتَحَقَّآ إِثْمًا فَـَٔاخَرَانِ يَقُومَانِ
مَقَامَهُمَا مِنَ ٱلَّذِينَ ٱسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ ٱلْأَوْلَيَـٰنِ
فَيُقْسِمَانِ بِٱللَّهِ لَشَهَـٰدَتُنَآ أَحَقُّ مِن شَهَـٰدَتِهِمَا
وَمَا ٱعْتَدَيْنَآ إِنَّآ إِذًا لَّمِنَ ٱلظَّـٰلِمِينَ (107)

१०७. फिर अगर पता लग जाये कि वह दोनों (गवाह) किसी गुनाह के पात्र (मुस्तहक़) हुये हैं[1] तो जिन के ऊपर गुनाह के पात्र हुए हैं उन में से दो क़रीबी रिश्तेदार दोनों (गवाहों) की जगह खड़े होगें और अल्लाह की क़सम लेंगे कि हमारी गवाहियाँ इन दोनों की गवाहियों से ज़्यादा सच है और हम ने ज़्यादती नहीं किया है, हम इस हालत में ज़ालिम होंगे।

ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ أَن يَأْتُوا۟ بِٱلشَّهَـٰدَةِ عَلَىٰ وَجْهِهَآ أَوْ يَخَافُوٓا۟
أَن تُرَدَّ أَيْمَـٰنٌۢ بَعْدَ أَيْمَـٰنِهِمْ ۗ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱسْمَعُوا۟ ۗ
وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَـٰسِقِينَ (108)

१०८. यह सबसे क़रीबी ज़रिया है कि वे लोग सच्ची गवाही दें या उन्हें यह डर हो कि क़समों के बाद फिर क़सम उल्टी पड़ जायेगी और अल्लाह से डरो और सुन लो कि अल्लाह फ़ासिकों को हिदायत नहीं देता।

يَوْمَ يَجْمَعُ ٱللَّهُ ٱلرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَآ أُجِبْتُمْ ۖ
قَالُوا۟ لَا عِلْمَ لَنَآ ۖ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّـٰمُ ٱلْغُيُوبِ (109)

१०९. जिस (क़यामत) दिन अल्लाह (तआला) पैग़म्बरों (उपदेशकों) को जमा करेगा, फिर पूछेगा कि तुम को क्या जवाब मिला था? वह जवाब देंगें हम को कुछ नहीं मालूम, सिर्फ़ तू ही ग़ैब का जानकार है।

إِذْ قَالَ ٱللَّهُ يَـٰعِيسَى ٱبْنَ مَرْيَمَ ٱذْكُرْ نِعْمَتِى
عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَٰلِدَتِكَ إِذْ أَيَّدتُّكَ بِرُوحِ ٱلْقُدُسِ
تُكَلِّمُ ٱلنَّاسَ فِى ٱلْمَهْدِ وَكَهْلًا ۖ وَإِذْ عَلَّمْتُكَ
ٱلْكِتَـٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَٱلتَّوْرَىٰةَ وَٱلْإِنجِيلَ ۖ وَإِذْ
تَخْلُقُ مِنَ ٱلطِّينِ كَهَيْـَٔةِ ٱلطَّيْرِ بِإِذْنِى فَتَنفُخُ

११०. जब अल्लाह कहेगा कि हे मरियम के बेटे ईसा! अपने और अपनी माँ के ऊपर मेरी नेमत को याद करो जब मैंने पाकीज़ा रूह[2] (जिब्रील) के ज़रिये तुम्हारी मदद की, तुम पालने में और अधेड़ उम्र में लोगों से बात करते रहे और जब हम ने किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील का इल्म दिया और जब तुम मेरे हुक्म से पक्षी की प्रतिमा (मुजस्समा) मिट्टी से बनाते थे और उस में फूंकते थे तो मेरे हुक्म से पक्षी बन

[1] यानी झूठी क़सम खाई है।

[2] इस से मुराद हज़रत जिब्रील है, जैसाकि सूर: अल-बक़र: की आयत नं॰ ८७ में गुज़रा।

فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَنكَ إِذْ جِئْتَهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ (110)

जाता था और तुम मेरे हुक्म से पैदाईशी अन्धे और कोढ़ी को सेहतयाब कर रहे थे और मेरे हुक्म से मुर्दों को निकालते थे और जब मैंने इस्राईल के बेटों को तुम से रोका जब तुम उन के पास मोजिजा लाये[1] तो उन में से काफ़िरों ने कहा कि यह सिर्फ़ खुला जादू है।

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ (111)

१११. और जबकि मैंने हवारियों को प्रेरणा (इल्हाम किया) दी[2] कि तुम मुझ पर और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ, उन्होंने कहा, हम ईमान लाये और आप गवाह रहिए कि हम पूरी तरह से फ़रमाबर्दार हैं।

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَن يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ ۖ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ (112)

११२. याद करो जब हवारियों ने कहा कि हे ईसा मरियम के बेटे! क्या तुम्हारा रब हम पर आसमान से एक थाल उतार सकता है?[3] उस (ईसा) ने कहा अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह से डरो।

---

[1] यह इशारा है उस साजिश की तरफ़ जो यहूदियों ने हजरत ईसा के क़त्ल करने और फांसी पर चढ़ाने के लिए बनाया था, जिस से महफ़ूज करके अल्लाह तआला ने उनको आसमान पर उठा लिया।

[2] "हवारी" से मुराद हजरत ईसा के वह मानने वाले हैं, जो उन पर ईमान लाये और उन के साथी और मददगार बने, उनकी तादाद बारह बतायी जाती है, यहाँ "वह्यी" से मुराद वह वह्यी नहीं जो फ़रिश्तों के जरिये रसूलों पर उतरती थी, बल्कि "मन में डालने" के मतलब में है जो अल्लाह की तरफ़ से कुछ लोगों के मन में पैदा कर दी जाती है, जैसे हजरत मूसा की माँ और हजरत मरियम में इसी तरह की मनोभावना पैदा की गई। इस से मालूम हुआ कि जिन लोगों ने "वह्यी" के कलिमा से मूसा की माँ और मरियम को रसूल माना है वह सही नहीं, इसलिए कि इसका मतलब मन में ख़्याल पैदा करना है, इसी तरह यहाँ हवारियों के रसूल होने का मतलब नहीं।

[3] मायद: ऐसे बर्तन (तबक, सीनी, प्लेट या ट्रे) को कहते हैं जिस में खाना हो, इसलिए खाने की जगह को भी मायद: कहा जाता है, क्योंकि उस पर भी खाना रखा जाता है, सूर: का नाम भी इसी वजह से है कि इस में इसका बयान है। हवारियों ने अपने दिल के सुकून के लिए यह माँग की थी, जिस तरह से हजरत इब्राहीम ने मुर्दों को जिलाये जाने के प्रदर्शन (मुशाहिदा) की माँग की थी।

قَالُوۡا نُرِيۡدُ اَنۡ نَّاۡكُلَ مِنۡهَا وَتَطۡمَٮِٕنَّ قُلُوۡبُنَا وَنَعۡلَمَ اَنۡ قَدۡ صَدَقۡتَنَا وَنَكُوۡنَ عَلَيۡهَا مِنَ الشّٰهِدِيۡنَ ﴿113﴾

११३. उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि उस में से खायें और हमारे दिलों को सुकून हो जाये और हमें यक़ीन हो कि आप ने हम से सच कहा और हम उस पर गवाह हो जायें।

قَالَ عِيۡسَى ابۡنُ مَرۡيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَاۤ اَنۡزِلۡ عَلَيۡنَا مَآٮِٕدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوۡنُ لَـنَا عِيۡدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنۡكَ‌ۚ وَارۡزُقۡنَا وَاَنۡتَ خَيۡرُ الرّٰزِقِيۡنَ ﴿114﴾

११४. मरियम के बेटे ईसा ने कहा, हे अल्लाह! हम पर आसमान से एक थाल उतार दे जो हम में से पहले और आख़िर के लिये ख़ुशी की बात हो जाये और तेरी तरफ़ से एक निशान हो और हमें रोज़ी अता कर तू बेहतर रोज़ी देने वाला है।

قَالَ اللّٰهُ اِنِّىۡ مُنَزِّلُهَا عَلَيۡكُمۡ‌ۚ فَمَنۡ يَّكۡفُرۡ بَعۡدُ مِنۡكُمۡ فَاِنِّىۡۤ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّاۤ اُعَذِّبُهٗۤ اَحَدًا مِّنَ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿115﴾

११५. अल्लाह (तआला) ने कहा कि मैं वह खाना तुम लोगों के लिए उतारने वाला हूँ, फिर तुम में से जो इंसान उस के बाद कुफ़्र करेगा तो मैं उस को ऐसा अज़ाब दूंगा कि वह अज़ाब मैं सारी दुनिया में किसी को न दूंगा।

وَاِذۡ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيۡسَى ابۡنَ مَرۡيَمَ ءَاَنۡتَ قُلۡتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوۡنِىۡ وَاُمِّىَ اِلٰهَيۡنِ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ‌ؕ قَالَ سُبۡحٰنَكَ مَا يَكُوۡنُ لِىۡۤ اَنۡ

११६. और (वह वक़्त भी याद करो है) जबकि अल्लाह (तआला) कहेगा कि हे ईसा इब्ने मरियम, क्या तुम ने उन लोगों से कह दिया था कि मुझ को और मेरी माँ को अल्लाह के सिवाय माबूद बना लेना?[1] (ईसा) कहेंगे कि मैं

[1] यह सवाल क़यामत के दिन होगा, मक़सद इस से अल्लाह को छोड़ कर किसी दूसरे को माबूद बनाने वालों को बाख़बर करना है कि जिन को तुम माबूद और परेशानी दूर करने वाला समझते थे वह तो ख़ुद अल्लाह के दरबार में उत्तरदायी (जवाबदेह) हैं।

दूसरी बात यह मालूम हुई कि इसाईयों ने हज़रत मसीह के साथ हज़रत मरियम को माबूद बनाया है।

तीसरी बात यह मालूम हुई कि अल्लाह के सिवाय माबूद वही नहीं जिन्हें मूर्तिपूजकों ने पत्थर या लकड़ियों का कोई रूप बनाकर उनकी इबादत की, जिस तरह आजकल क़ब्र के पूजारी आलिम अपनी जनता को यह बताकर धोखा दे रहे हैं, बल्कि अल्लाह के वे बंदे भी अल्लाह के सिवाय माबूद की परिधि (दायरे) में आते हैं जिनकी लोगों ने किसी भी रूप से इबादत की, जैसे हज़रत ईसा और मरियम की इसाईयों ने की।

اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۗ بِحَقٍّ ۗ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۗ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۗ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿116﴾

तो तुझे मुनज़्ज़ह (पाक) समझता हूं, मुझ को किस तरह से शोभा (ज़ेब) देती कि मैं ऐसी बात कहता जिस के कहने का मुझे कोई हक़ नहीं, अगर मैंने कहा होगा तो तुझ को उस का इल्म होगा, तू तो मेरे दिल की बात जानता है, मैं तेरे जी में जो कुछ है उस को नहीं जानता, सिर्फ़ तू ही ग़ैबों (परोक्षों) का जानकार है।

مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۗ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿117﴾

११७. मैंने उन से सिर्फ़ वही कहा जिस का तूने मुझे हुक्म दिया कि अपने रब और मेरे रब अल्लाह की इबादत करो, और जब तक मैं उन में रहा उन पर गवाह रहा और जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उनका संरक्षक (निगरां) था और तू हर चीज़ पर गवाह है।

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿118﴾

११८. अगर तू इन को सज़ा दे तो यह तेरे बंदे हैं और अगर तू इन्हें माफ़ कर दे तो तू ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۗ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۗ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۗ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿119﴾

११९. अल्लाह (तआला) कहेगा कि यह वह दिन है कि सच्चों का सच उन के लिए फ़ायदेमंद होगा, उन को बाग़ मिलेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी, जिस में वह हमेशा हमेश रहेंगे, अल्लाह तआला उन से ख़ुश (प्रसन्न) और ये अल्लाह से ख़ुश हैं, यह बहुत भारी कामयाबी (सफलता) है।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۗ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿120﴾

१२०. अल्लाह ही का मुल्क (राज्य) है, आसमानों का और ज़मीन का और उनका जो उन में मौजूद हैं और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

सूरतुल अन्आम-६

سُورَةُ الْأَنْعَامِ

सूर: अन्आम मक्का में नाज़िल हुई और इस में एक सौ पैंसठ आयतें और वीस रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बहुत मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और अंधेरों व नूर को बनाया[1] फिर भी जो ईमान नहीं रखते (दूसरों को) अपने रब के बराबर मानते हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١﴾

२ उसी ने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर एक वक़्त मुक़र्रर किया,[2] और एक मुक़र्रर वक़्त उस के पास है,[3] फिर भी तुम शक करते हो।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ۭ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ﴿٢﴾

३. और वही अल्लाह है आसमानों में और ज़मीन में, वह तुम्हारे छुपे और ज़ाहिर को जानता है और तुम्हारी कमाई से बाख़बर है।[4]

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْاَرْضِ ۭ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ﴿٣﴾

---

[1] ज़ुलुमात से रात का अंधेरा और नूर से दिन का उजाला या कुफ़्र (अविश्वास) का अंधेरा और ईमान का उजाला मुराद है।

[2] यानी मौत का वक़्त।

[3] यानी आख़िरी दिन के वक़्त को सिर्फ़ अल्लाह जानता है, यानी पहला "अजल" लफ़्ज इस्तेमाल किया गया है, उसका मतलब पैदाईश से मौत तक का वक़्त (उम्र) है, दूसरे "अजलुममुस्सम्मा" कलिमा का मतलब मौत के बाद से क़यामत तक दुनिया की उम्र है, जिस के बाद वह पतन (ज़वाल) और विनाश (तबाही) से मिल कर ख़त्म हो जायेगा और एक दूसरी दुनिया यानी आख़िरत की जिन्दगी की शुरूआत होगी।

[4] अहले सुन्नत यानी सलफ़ का अक़ीदा है कि अल्लाह तआला ख़ुद तो अर्श पर है जैसा कि वह तारीफ़ के लायक़ है, लेकिन अपने इल्म के आधार पर हर जगह पर है, यानी उस के इल्म और ख़बर के दायरे से कोई भी चीज़ बाहर नहीं, लेकिन कुछ गुटों के लोग यह कहते हैं कि अल्लाह तआला अर्श पर नहीं बल्कि हर जगह पर है, और वह इस आयत से अपने ईमान की तसदीक़ करते हैं, लेकिन यह ईमान ठीक नहीं है, यह दलील भी ठीक नहीं है, आयत का मतलब यह है कि वह ताक़त जिसको आसमानों और ज़मीन पर अल्लाह कहकर पुकारते हैं और आसमानों ज़मीन पर जिसका मुल्क है और आसमानों ज़मीन पर जिसको माबूद समभ्रा

وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ (4)

४. और उन के पास कोई निशानी उन के रब की निशानियों में से नहीं आती बल्कि वह उस से मुंह फेरते हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ (5)

५. उन्होंने उस सच्ची किताब को भी झूठा बताया जबकि वह उन के पास पहुंची, तो जल्द ही उन्हें ख़बर मिल जायेगी, उस चीज़ की जिस का यह लोग मज़ाक़ करते थे।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّن لَّكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِم مِّدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ (6)

६. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम उन से पहले कितने गुटों को बर्बाद कर चुके हैं जिन को हम ने दुनिया में इतनी ताक़त अता की थी जैसी तुम्हें भी नहीं अता किया और हम ने उन पर मूसलाधार बारिश की, और हम ने उन के नीचे से नदियां बहायीं, फिर हम ने उन को उन के गुनाहों के सबब बर्बाद कर दिया[1] और उन के बाद दूसरी क़ौम पैदा किया।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ (7)

७. और अगर हम कागज़ पर लिखी हुई कोई पुस्तक भी आप पर उतारते, फिर यह लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी यह काफ़िर लोग यही कहते कि यह कुछ भी नहीं मगर खुला जादू है।

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ (8)

८. और उन्होंने कहा कि आप पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? और अगर हम फ़रिश्ता उतार देते तो विषय का फ़ैसला कर

जाता है, वह अल्लाह तुम्हारे छिपे और ज़ाहिर और जो कुछ अमल तुम लोग करते हो सब को जानता है। (फ़तहुल क़दीर) इसकी दूसरी दलील भी पेश की गई हैं जिन्हें आलिम लोगों की तफ़सीर में देखा जा सकता है जैसे तफ़सीर तबरी और इब्ने कसीर आदि (वग़ैरह)।

[1] यानी जब गुनाह के सबब तुम से पहले की क़ौमों को हम बर्बाद कर चुके हैं, जबकि वे ताक़त में तुम से कहीं ज़्यादा थे, ज़रिया और माल के बाहुल्य (बहुतात) में भी तुम से ज़्यादा थे तो तुम्हें बर्बाद करना हमारे लिये क्या कठिन है? इस से मालूम हुआ कि किसी समाज की ज़ाहरी तरक़्क़ी और ख़ुशहाली से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वह कामयाब और विजयी है, यह मौक़ा और वक़्त देने की वह हालत हैं जो इम्तेहान लेने के लिए कई क़ौमों को दी जाती है, लेकिन जब उनका वक़्त पूरा हो जाता है तो यह सारी तरक़्क़ी और ख़ुशहाली उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचाने में कामयाब नहीं होती।

दिया जाता फिर उन्हें मौक़ा नहीं दिया जाता ।[1]

९. और अगर हम रसूल को फ़रिश्ता बनाते तो उसे मर्द बनाते और उन पर वही शक पैदा करते जो शक कर रहे हैं ।[2]

وَلَوْ جَعَلْنَٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَٰهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا يَلْبِسُونَ ﴿٩﴾

१०. और आप से पहले बहुत से रसूलों (ईशदूतों) का मज़ाक़ किया गया, तो जो मज़ाक़ कर रहे थे उन के मज़ाक़ का बुरा नतीजा उन पर पलट पड़ा ।

وَلَقَدِ ٱسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِٱلَّذِينَ سَخِرُوا۟ مِنْهُم مَّا كَانُوا۟ بِهِۦ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٠﴾

११. आप कह दीजिए कि ज़रा ज़मीन पर घूम फिर कर देख लो कि झुठलाने वालों का क्या नतीजा हुआ?

قُلْ سِيرُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ ثُمَّ ٱنظُرُوا۟ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُكَذِّبِينَ ﴿١١﴾

१२ आप कह दीजिए कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है इन सब पर किस की मिल्कियत है? आप कह दीजिए, सब पर अल्लाह की मिल्कियत है, अल्लाह ने रहमत करना अपने ऊपर फ़र्ज़ कर लिया है ।[3] तुम को अल्लाह (तआला) क़यामत के दिन जमा करेगा, इस में कोई शक नहीं, जिन लोगों ने ख़ुद को बर्बाद कर लिया है, वही ईमान नहीं लायेंगे ।

قُل لِّمَن مَّا فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ قُل لِّلَّهِ ۚ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ ٱلرَّحْمَةَ ۚ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ ٱلَّذِينَ خَسِرُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾

[1] अल्लाह ने इंसानों को हिदायत देने के लिए, जितने भी अम्बिया और रसूल (संदेशवाहक) भेजे सभी इंसान मर्द ही थे, और हर क़ौम में उन्हीं में से एक को वह्यी और रिसालत के लिए चुन लिया, यह इसलिये कि उसके बिना रसूल हिदायत का काम पूरा नहीं कर सकता था ।

[2] यानी अगर हम फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर भेजने का फ़ैसला करते, तो साफ़ बात है कि वह फ़रिश्ते की शक्ल में आ नहीं सकता था, क्योंकि इस तरह से इंसान उस से डर जाते और क़ुरबत और नज़दीकी पैदा करने के बजाय दूर भागते, इसलिए ज़रूरी था कि उसे इंसान की शक्ल में भेजा जाता, लेकिन तुम्हारे यह नेता फिर यही शक करते कि इंसान ही है, जो इस वक़्त भी रसूल को इंसान की शक्ल में पेश कर रहे हैं तो फ़रिश्ते के भेजने का क्या फ़ायेदा?

[3] जिस तरह हदीस में नबी ﷺ ने फ़रमाया: जब अल्लाह तआला ने दुनिया को पैदा किया तो अर्श पर यह लिख दिया «إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي» (सहीह बुख़ारी) । बेशक मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर प्रभावी (ग़ालिब) है, लेकिन यह रहमत क़यामत के दिन केवल ईमानवालों के लिए होगी, काफ़िरों पर अल्लाह बहुत ग़ज़बनाक होगा, इसका मतलब यह है कि दुनिया में उसकी नेमत और रहमत आम तौर से सभी के लिए है चाहे वे ईमानवाला, काफ़िर, नेक काम करने वाला या बुरे काम करने वाला ।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (13)

१३. और जो कुछ दिन और रात में रहते हैं वह सभी कुछ अल्लाह के ही हैं और वह बहुत सुनने वाला और बड़ा जानने वाला है।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ۗ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ ۖ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ (14)

१४ आप कहिये कि क्या मैं उस अल्लाह के सिवाय को दोस्त (रब, माबूद) बना लूं जो आसमानों और ज़मीन का ख़ालिक़ है, और वह खिलाता है खिलाया नहीं जाता, आप कहिये कि मुझे हुक्म किया गया है कि मैं उन में सब से पहले रहूँ जिस ने (अल्लाह पर) आत्मसमर्पण किया और मुश्रिकों में कभी भी न रहूँ।

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ (15)

१५. आप कह दीजिए कि मैं अगर अपने रब का कहना न मानूं तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डराता हूँ।

مَنْ يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ ۚ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ (16)

१६. जिस से उस दिन सज़ा ख़त्म कर दी जायेगी, उस पर अल्लाह ने बहुत रहमत की और यह वाज़ेह कामयाबी है।

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ ۖ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (17)

१७. और अगर अल्लाह (तआला) तुझ को कोई तकलीफ़ दे तो उसको दूर करने वाला अल्लाह तआला के सिवाय कोई दूसरा नहीं है और अगर तुझ को अल्लाह तआला फ़ायेदा अता करे तो वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ (18)

१८. वही अपने बन्दों पर प्रभावशाली (ग़ालिब) है और वही हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला है।

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ۚ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ ۚ قُلْ لَا أَشْهَدُ ۚ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ (19)

१९ आप कहिये कि किस की गवाही बड़ी है, कहिये कि हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह (साक्षी) है और यह क़ुरआन मेरी तरफ़ वह्यी किया गया है ताकि उस के ज़रिये तुम्हें और जिस तक पहुँचे उन सब को आगाह करूं,[1] क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे माबूद

---

[1] रबीअ बिन अनस कहते हैं कि अब जिस के पास भी यह क़ुरआन पहुँच जाये, अगर वह रसूल ﷺ का सच्चा पैरोकार है तो उसका यह फ़र्ज़ है कि वह भी लोगों को अल्लाह की तरफ़ उसी तरह दावत दे, जिस तरह रसूल ﷺ ने लोगों को दावत दिया था और उसी तरह बाख़बर करे जिस तरह से आप ﷺ ने बाख़बर किया था। (इब्ने कसीर)

हैं? आप कह दें कि मैं इस की गवाही नहीं देता, आप कहिये कि वह एक ही माबूद है और मैं तुम्हारे शिर्क से बरी हूँ।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿20﴾

२०. जिन्हें हम ने किताब (तौरात और इंजील) दी है वह आप (मुहम्मद ﷺ) को उसी तरह पहचानते हैं, जैसे अपने बेटों को, जो अपने आप को खो दिये हैं वही यक़ीन नहीं करेंगे।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿21﴾

२१. और उस से बढ़कर जालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठा इल्जाम लगाये और उस की निशानियों (चिन्हों) को झूठा माने, बेशक जालिम कामयाब नहीं होते।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿22﴾

२२. और जिस दिन हम सब को जमा करेंगे, फिर जिन्होंने शिर्क किया उन से कहेंगे वे कहाँ हैं जिन को तुम (अल्लाह का) साझी समझ रहे थे (वह दिन याद है)।

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿23﴾

२३. फिर उन के शिर्क का सिवाये इस के कोई बहाना न होगा कि कहें कि अपने रब अल्लाह की क़सम हम मुशरिक नहीं थे।[1]

اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿24﴾

२४. देखो कि वह कैसे अपने ऊपर झूठ बोल गये और उन का इल्जाम उन से खो गया।

[1] फ़ित्ना का एक मतलब शिर्क और एक मतलब तौबा के किये गये हैं, यानी आख़िर में यह दलील और तौबा को पेश करके छुटकारा पाने की कोशिश करेंगे कि हम तो मूर्तिपूजक नहीं थे।

यहाँ यह शक न हो कि वहाँ तो इंसान के हाथ-पैर गवाही देंगे और मुँह पर मोहर लगा दी जायेगी, फिर यह इंकार किस तरह करेंगे? इसका जवाब हजरत इब्ने अब्बास ने दिया है कि जब मूर्तिपूजक देखेंगे कि मुसलमान जन्नत में जा रहे हैं तो वह आपस में विचार-विमर्श (राय-मश्विरा) कर के मूर्तिपूजन से ही इंकार कर देंगे, तब अल्लाह तआला उन के मुँह पर मोहर लगा देगा और उन के हाथ-पैर उन्होंने जो किया होगा उसकी गवाही देंगे, फिर वह अल्लाह तआला से कोई बात छुपाने की ताक़त न रख सकेंगे। (इब्ने कसीर)

२५. उन में से कुछ आप की ओर कान धरते हैं,[1] और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं कि उसे समझें और उन के कान बहरे हैं, और अगर वह सभी निशानियों को देख लें तब भी उन पर यक़ीन नहीं करेंगे, यहाँ तक कि जब आप के पास आते हैं झगड़ा करते हैं, काफ़िर (विश्वासहीन) कहते हैं कि यह सिर्फ़ बुज़ुर्गों की ख़्याली कहानियाँ हैं।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۗ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿25﴾

२६. और यह लोग इस से दूसरों को भी रोकते हैं और ख़ुद भी दूर-दूर रहते हैं, और ये लोग अपने आप को बर्बाद कर रहे हैं और कुछ नहीं जानते।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْــَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿26﴾

२७. और अगर आप उस वक़्त देखें जब ये लोग जहन्नम के क़रीब खड़े किये जायेंगे तो कहेंगे,[2] हाय! क्या ही अच्छी बात हो कि हम फिर वापस भेज दिये जायें (और अगर ऐसा हो जाये) तो हम अपने रब की निशानियों को न झुठलायें और हम ईमानवालों में से हो जायें।

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿27﴾

२८. बल्कि जिस चीज़ को इस के पहले छुपाया करते थे वह उन के सामने आ गयी है, अगर यह लोग फिर वापस भेज दिये जायें तब भी यह वही करेंगे जिस से इन को रोका गया था और बेशक वे लोग झूठे हैं।

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ۗ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿28﴾

२९. और यह कहते हैं कि सिर्फ़ यही दुनियावी ज़िन्दगी हमारी ज़िन्दगी है और हम दोबारा ज़िन्दा नहीं किये जायेंगे।

وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿29﴾

[1] यानी यह मूर्तिपूजक आप के पास क़ुरआन तो आकर सुनते हैं, लेकिन चूँकि मक़सद हिदायत हासिल करना नहीं है, इसलिए इस से कोई फ़ायेदा नहीं हासिल करते।

[2] यहाँ पर अगर का जवाब ग़ायब है जो इस तरह होगा, "तो आप को भयानक मंज़र दिखायी देगा।"

وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ وُقِفُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ ۚ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ (30)

३०. और अगर आप उस वक़्त देखें जब ये अपने रब के सामने खड़े किये जायेंगे, अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा कि क्या यह सच नहीं है? वे कहेंगे बेशक रब की क़सम सच है, अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा तो अपने कुफ़्र (अविश्वास) का अज़ाब सहन करो।

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا جَاءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ۚ أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ (31)

३१. बेशक नुक़सान में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब वह मुक़र्रर वक़्त उन पर अचानक आ पड़ेगा, कहेंगे कि हाय अफ़सोस हमारी सुस्ती पर जो इस के बारे में हुई और उनकी हालत यह होगी कि अपना बोझ अपनी कमर पर लादे हुए होंगे, ख़बरदार! वह बुरा बोझ लादेंगे।

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهْوٌ ۖ وَلَلدَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (32)

३२. और दुनियावी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं सिवाये खेल-तमाशा के, और आख़िरी घर (आख़िरत) अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा है, क्या तुम सोच-विचार नहीं करते हो?

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ ۖ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُونَكَ وَلَٰكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ (33)

३३. हम अच्छी तरह जानते हैं कि उन के क़ौल आप को दुखी करते हैं, तो यह लोग आप को झूठा नहीं कहते, लेकिन यह ज़ालिम अल्लाह तआला की आयतों का इंकार करते हैं।[1]

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتَّىٰٓ أَتَاهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِن نَّبَإِي الْمُرْسَلِينَ (34)

३४. और आप से पहले रसूलों को झूठा कहा जा चुका है और उन्होंने उस झुठलाये जाने पर सब्र किया, और वे तकलीफ़ दिये गये यहाँ तक कि उन के पास हमारी मदद आ गई, अल्लाह की बातें कोई बदलने वाला नहीं, और आप के

---

[1] नबी ﷺ को काफ़िरों के झुठलाने पर जो तकलीफ़ और दुख पहुँचता था, उस के इज़ाला और आप ﷺ को तसल्ली के लिए फ़रमाया जा रहा है कि यह आप को नहीं झुठला रहे हैं (आप को तो सच्चे और ईमानदार मानते हैं) बल्कि यह अल्लाह की आयतों को झुठलाया जा रहा है, और यह एक ज़ुल्म है जो वह कर रहे हैं, आज भी जो लोग नबी ﷺ के अच्छे किरदार, न्यायकारी, ईमानदारी और सच्चाई का ख़ूब झूम-झूम कर बयान करते हैं और इस विषय पर ज़ोरदार भाषण देते हैं, लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ की पैरवी करने में कठिनाई महसूस करते हैं, आप ﷺ के क़ौल के मुक़ाबले में सोच, फ़िक्र और अपने नेताओं के क़ौल को अहमियत देते हैं, उन्हें सोचना चाहिए कि यह किसका किरदार है जिसे उन्होंने अपनाया है?

पास पैग़म्बरों के वाक़ेआत आ चुके हैं।

३५. और अगर उनका मुहँ फेरना आप पर भारी हो रहा है तो अगर आप से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी खोज लें और उन के पास कोई मोजिज़ा ला दें और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें सच्चे रास्ते पर जमा कर देता[1] इसलिए मुर्खों में न बनिये।

وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿35﴾

३६. वही लोग क़ुबूल करते हैं जो सुनते है,[2] और मरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) ज़िन्दा कर के उठायेगा, फिर सब उसी (अल्लाह ही) की तरफ़ लाये जायेंगे।

اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿36﴾

३७. और उन्होंने कहा कि उन पर उन के रब की ओर से कोई मोजिज़ा क्यों नहीं उतारा गया? आप कह दें कि अल्लाह कोई मोजिज़ा उतारने की पूरी क़ुदरत रखता है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿37﴾

३८. और जितने तरह के जानदार ज़मीन पर चलने वाले हैं और जितने तरह के पंख से उड़ने वाले पक्षी हैं, उन में से कोई भी ऐसा नहीं जो कि तुम्हारी तरह के गुट न हों, हम ने किताब में लिखने से कोई चीज़ न छोड़ी,[3] फिर

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿38﴾

---

[1] नबी ﷺ को मुख़ालिफ़ों और काफ़िरों के झुठलाने से जो तकलीफ़ और दुख पहुँचता था उस के बिना पर अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि ये तो अल्लाह तआला की मर्ज़ी और तक़दीर से होना ही था, और अल्लाह के हुक्म के बिना आप ﷺ उन्हें दीन इस्लाम क़ुबूल करने के लिए तैयार नही कर सकते, चाहे आप ﷺ ज़मीन में सुरंग खोदकर और आसमान पर सीढ़ी लगाकर कोई निशानी लाकर उन्हें दिखा भी दें।

[2] यानी उन काफ़िरों की हालत मुर्दों की तरह है, जिस तरह से वह बोलने और सुनने की ताक़त से महरूम है, यह भी चूँकि अपनी अक़्ल और फ़िक्र से सच के समझने का काम नही लेते, इसलिए यह भी मरे हुए की तरह हैं।

[3] किताब से मुराद लौह महफ़ूज है, (महफ़ूज किताब है जिस में सभी लोगों की तक़दीर उन के अमल के ऐतबार से अल्लाह के अज़ली इल्म की बुनियाद पर महफ़ूज़ करके लिख दिया है) यानी वहाँ हर चीज़ लिखी हुई है या क़ुरआन है, जिस में मुख़्तसर और तफ़सीली तौर से दीन

सब अपने रब के पास जमा किये जायेंगे।

३९. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को नहीं माना वह बहरे गूंगे अंधेरे में हैं, अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है और जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर लगा देता है।[1]

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿39﴾

४०. आप कह दीजिए कि अपना हाल तो बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का कोई अजाब आ पड़े या तुम पर क़यामत ही आ पहुँचे तो क्या अल्लाह के सिवाय दूसरों को पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो।

قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿40﴾

४१. बल्कि ख़ास तौर से उसी को पुकारोगे, फिर जिस के लिए तुम पुकारोगे अगर वह चाहे तो उस को हटा भी दे और जिन को तुम साभीदार ठहराते हो उन सभी को भूल जाओगे।

بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿41﴾

४२. और हम ने दूसरी उम्मतों की तरफ़ भी जो कि आप से पहले गुजर चुकी हैं, पैग़म्बर भेजे थे उन को भी हम ने ग़रीबी और रोग से पकड़ा ताकि वे आजिजी करें।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿42﴾

४३. इस तरह जब उन्हें हमारी सज़ा मिली तो वे कमज़ोर क्यों न पड़े? लेकिन उन के दिल सख़्त हो गये और शैतान ने उन के अमलों को उन के ख़्यालों में अच्छा कर दिया।

فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿43﴾

४४. और जब वह उस नसीहत को भूल गये जिस की शिक्षा दी गई थी तो हम ने उन पर हर चीज के दरवाजे खोल दिये, यहाँ तक कि वह जब अपनी पाई हुई चीजों पर इतरा गये तो उन्हें हम ने अचानक पकड़ लिया और वह मायूस हो

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰٓى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿44﴾

के हर क़ानून पर रौशनी डाली गई है।

[1] अल्लाह की आयतों को झुठलाने वाले चूँकि अपने कानों से सच बात नहीं सुनते और अपने मुँह से सच नहीं बोलते, इसलिए वह ऐसे हैं जैसे गूंगे और बहरे होते हैं, इस के सिवाय यह कुफ़्र जिल्लत के अंधेरे में घिरे हुए होते हैं, इसलिए उन्हें कोई ऐसी चीज दिखायी नहीं देती जिस से वे अपना सुधार कर सकें।

कर रह गये।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (45)

४५. फिर जालिम लोगों की जड़ कट गयी और अल्लाह (तआला) की तारीफ है जो दुनिया का रब है।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُم مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ ۗ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ (46)

४६. आप कहिए कि यह वताओ अगर अल्लाह (तआला) तुम्हारे सुनने और देखने की ताक़त पूरी तरह से ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे तो अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई माबूद है कि यह तुम को फिर दे दे? आप देखिए कि हम किस तरह से दलील को कई रूप से पेश कर रहे हैं, फिर भी वह कतरा रहे हैं।[1]

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الظَّالِمُونَ (47)

४७. आप कहिए कि यह वताओ अगर तुम पर अल्लाह का अज़ाब अचानक या सावधानी में आ पड़े तो क्या सिवाये ज़ालिमों के कोई मारा जायेगा।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۖ فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (48)

४८. और हम पैग़म्बर को इसलिए भेजा करते हैं कि वे ख़ुशख़बरी दें और डरायें, फिर जो ईमान ले आये और अपना सुधार कर ले उन को न कोई डर होगा ओर न वे दुखी होंगे।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ (49)

४९. और जो लोग हमारी आयतों को झुठलायें उन को अज़ाब पहुँचेगा क्योंकि वे नाफ़रमान हैं।

[1] आँख कान और दिल इंसानी जिस्म के ख़ास अंग हैं, अल्लाह कह रहा है कि अगर वह चाहे तो इन अंगों में जो खुसूसियत रखी हैं उन्हें छीन ले, यानी सुनने देखने की ताकत, जिस तरह गुमराहों के अंग इन खुसूसियतों से महरूम होते हैं या वह चाहे तो इन अंगों ही को ख़त्म कर दे वह दोनों बातों की क़ुदरत रखता है, उस की पकड़ से कोई बच नही सकता है, लेकिन यह कि वह ख़ुद किसी को बचाना चाहे, आयतों को कई तरीक़े से पेश करने का मतलब यह है कि कभी डराने और ख़ुशख़बरी देने के ज़रिये, कभी लालच और चेतावनी (तंबीह) देने के ज़रिये और कभी दूसरे ज़रिये से।

५०. (आप) कह दीजिए कि न तो मैं तुम से यह कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह का ख़ज़ाना है और न मैं ग़ैब जानता हूँ, और न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं तो सिर्फ़ जो कुछ मेरे पास वह्यी आती है, उसकी पैरवी करता हूँ।[1] (आप) कहिए कि अंधा और आँख वाला किस तरह बराबर हो सकते हैं? तो क्या तुम फ़िक्र नहीं करते!

قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۭ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۭ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿50﴾

५१. और ऐसे लोगों को डराईए जो इस बात का डर रखते हैं कि अपने रब के सामने इस हालत में जमा किये जायेंगे कि जितने अल्लाह के अलावा हैं न उनकी मदद करेंगे और न कोई सिफ़ारिश करने वाला होगा, इस उम्मीद के साथ कि वे डर जायेंगे।

وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿51﴾

५२ और आप उन्हें न निकालिए जो सुबह और शाम अपने रब की इबादत करते हैं, ख़ास तौर से उसकी ख़ुशी की फ़िक्र करते हैं, उनका हिसाब ज़रा भी आप से संबन्धित नहीं, और आप का हिसाब ज़रा भी उन से संबन्धित नहीं कि आप उन को निकाल दें, बल्कि आप ज़ुल्म करने वालों में से हो जायेंगे।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ۭ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿52﴾

[1] "मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने भी नही हैं, इस से मुराद यह है कि हर तरह की ताक़त और क़ुदरत मेरे पास नहीं है कि मैं तुम्हें अल्लाह के हुक्म और मर्ज़ी के बिना कोई मोजिज़ा दिखा दूँ जैसाकि तुम चाहते हो, जिसे देख कर तुम्हें मेरी सच्चाई पर यक़ीन आ जाये, मेरे पास अप्रत्यक्ष (ग़ैब) का इल्म भी नहीं है जिस से मैं मुस्तक़बिल में घटित होने वाली घटनाओं से तुम्हें बाख़बर कर सकूँ। मैं फ़रिश्ता होने का दावा भी नहीं कर सकता कि तुम मुझे ऐसे काम करने के लिए मजबूर करो जो इंसान की ताक़त और क़ूवत से बाहर की बात हो, मैं तो केवल उस वह्यी का मानने वाला हूँ जो मुझ पर उतारी गयी और इस में हदीस भी है, जैसाकि आप ने फ़रमाया: "मुझे क़ुरआन के साथ उस के समान भी अता किया गया।" यह समान हदीस रसूलुल्लाह ﷺ है।

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿53﴾

५३. और इसी तरह हम ने उन्हें आपस में इम्तेहान में डाल दिया ताकि यह कहें कि क्या अल्लाह ने हमारे बीच से उन पर एहसान किया है,[1] क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह शुक्र अदा करने वालों को खूब जानता है।[2]

وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿54﴾

५४ और आप के पास जब वह लोग आयें जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो कह दीजिए, "तुम पर सलामती हो," तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत फ़र्ज़ कर लिया है कि तुम में से जिस ने बेवकूफ़ी से बुरा काम कर लिया फिर उस के बाद तौबा और सुधार कर लिया तो अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿55﴾

५५. इसी तरह हम अपनी आयतों का तफ़सीली बयान करते हैं ताकि मुजरिमों का रास्ता वाज़ेह हो जाये।

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿56﴾

५६. आप कह दीजिए कि मुझे रोका गया है कि उन की इबादत करूँ जिन को अल्लाह के सिवाये तुम पुकारते हो, आप कहिए कि मैं तुम्हारी मनमानी की पैरवी न करूँगा, क्योंकि ऐसी हालत में मैं गुमराह हो जाऊंगा और हिदायत पर नहीं रह जाऊंगा।[3]

---

[1] शुरू में ज़्यादातर ग़रीब या गुलाम लोग ही मुसलमान हुए थे, इसलिए यही बात धनवान काफ़िरों के इम्तेहान का सबब बन गयी, और वे इन ग़रीबों का मज़ाक़ उड़ाते थे और जो उन के क़ाबू में थे उन्हें वे तक़लीफ़ भी देते थे और कहते थे कि क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान किया है? उनका मतलब यह होता था कि ईमान और इस्लाम पर अगर हक़ीक़त में अल्लाह का एहसान होता तो यह सब से पहले हम पर होता, जिस तरह दूसरी जगह पर कहा है।

[2] यानी अल्लाह तआला उपरी चमक-दमक, भेष-भूषा और आन-बान को नहीं देखता, वह तो दिल की हालत को देखता और उसी से जानता है कि शुक्रगुज़ार और सच्चे बन्दे कौन हैं?

[3] यानी अगर मैं भी तुम्हारी तरह अल्लाह की इबादत (आराधना) के बजाय, तुम्हारी इच्छाओं (मर्ज़ी) के अनुसार अल्लाह के सिवाय दूसरे की इबादत करना शुरू कर दूं तो ज़रूर मैं भटक जाऊंगा, मतलब यह है कि अल्लाह के सिवाय दूसरे की इबादत और बंदगी करना सबसे बड़ा

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُم بِهِ ۚ مَا عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ ۖ يَقُصُّ الْحَقَّ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ﴿57﴾

५७. (आप) कह दीजिए कि मेरे पास एक सुबूत है मेरे रब की तरफ से, और तुम उस को झुठलाते हो। जिस चीज की तुम जल्दी कर रहे हो वह मेरे पास नहीं, हुक्म किसी का नहीं सिवाये अल्लाह के, अल्लाह तआला वास्तविक बातों को बता देता है और वही सब से अच्छा फैसला करने वाला है।

قُل لَّوْ أَنَّ عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿58﴾

५८. आप कह दीजिए कि अगर मेरे पास वह जिस की तुम जल्दी मांग कर रहे हो, होती तो मेरे और तुम्हारे बीच (झगड़े का) फैसला हो गया होता, और अल्लाह जालिमों को अच्छी तरह जानता है।

وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿59﴾

५९. और उसी (अल्लाह) के पास गैब की कुंजियां हैं जिन को सिर्फ वही जानता है, और जो थल और जल में हैं उन सभी को जानता है और जो पत्ता गिरता है उसे भी जानता है और जमीन के अंधेरों में कोई भी दाना नहीं पड़ता और न कोई तर और खुश्क चीज गिरती है, लेकिन ये सब खुली किताब में है।[1]

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿60﴾

६०. वही (अल्लाह) है जो रात में तुम्हारी रूह को (एक गुणा) क़ब्ज करता है[2] और दिन में जो भी करते हो जानता है, फिर तुम्हें उस में एक मुकर्ररा मुद्दत पूरी करने के लिये जागृत करता है, फिर तुम्हें उसी की तरफ लौट जाना

भटकाव है, लेकिन बदनसीबी में यह भटकाव उतना ही आम है, यहां तक कि मुसलमानों का एक गुट भी इस में लिप्त (मुब्तिला) है। هداهم الله تعالى

[1] "किताब मोबीन" से मुराद "महफ़ूज किताब" है, इस आयत से भी मालूम हुआ कि गैब का इल्म सिर्फ अल्लाह को ही है, सभी गैब का ख़जाना उसी के पास है, इसलिए नाशुक्रों, मूर्तिपूजकों और मुख़ालिफों पर कब अजाब डाला जाये इसका भी इल्म अल्लाह ही को है, और वही अपनी मर्जी से इसका फैसला करने वाला है। हदीस में आता है कि परोक्ष (गैब) की बातें पांच हैं १. कयामत का इल्म, २. बारिश का आना, ३. मां के पेट में पलने वाला बच्चा, ४. कल मुस्तक़बिल में होने वाला हादसा और ५. मौत किस जगह पर आयेगी। इन पांचों बातों का इल्म केवल अल्लाह ही को है। (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अल-अंआम)

[2] यहां नींद को मौत कहा गया है, इसलिए इसे "छोटी मौत" और मौत को "बड़ी मौत" कहा गया है. मौत की वजाहत के लिए देखें सूर: आले इमरान आयत न. ५५ की तफ़सीर)

है, फिर जो तुम करते रहे उसे तुम को बता देगा।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ﴿61﴾

६१. वही अपने बन्दों पर ग़ालिब है और तुम पर निगराँ (फ़रिश्ते) भेजता है, यहाँ तक कि जब तुम में किसी की मौत (का वक़्त) आ जाये तो हमारे फ़रिश्ते उस की जान निकाल लेते हैं और वे ज़रा भी सुस्ती नहीं करते।

ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ ۚ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ﴿62﴾

६२. फिर वे अपने सच्चे रब (अल्लाह) के पास लाये जायेंगे, होशियार! उसी का हुक्म चलेगा और वह बहुत जल्द हिसाब लेगा।

قُلْ مَنْ يُنَجِّيكُمْ مِنْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَئِنْ أَنْجَانَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿63﴾

६३. आप कहिये कि थल और जल के अंधेरों से जब उसे नर्मी और चुपके से पुकारते हो कि अगर हमें इस से आज़ाद कर दे तो तेरे ज़रूर शुक्रगुज़ार हो जायेंगे तो तुम्हें कौन बचाता है?

قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿64﴾

६४. आप ख़ुद कहिये कि इस से और हर मुसीबत से तुम्हें अल्लाह ही बचाता है, फिर भी तुम ही शिर्क करते हो।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ ۗ انْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ﴿65﴾

६५. आप कहिये कि वही तुम पर तुम्हारे ऊपर से कोई अज़ाब भेजने या तुम्हारे पैरों के नीचे[1] से (अज़ाब) भेजने या तुम्हें अनेक गिरोह बनाकर आपस में लड़ाई का मज़ा चखाने की ताक़त रखता है। आप देखिये कि हम कई तरह से कैसे बातों (आयतों) को बयान कर रहे हैं ताकि वह समझ जायें।

وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ۚ قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ﴿66﴾

६६. और आप की क़ौम ने उसे झुठला दिया जब कि वह हक़ है। आप कह दीजिए कि मैं तुम पर अधिकारी (निगराँ) नहीं हूँ।

لِكُلِّ نَبَإٍ مُسْتَقَرٌّ ۚ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿67﴾

६७. हर ख़बर का एक मुक़र्रर वक़्त है और तुम जल्द ही जान लोगे।

---

[1] जैसे धंसाया जाना, तूफ़ान बाढ़, जिस मे सब कुछ डूब जाता है या मतलब है कि अधीनस्थ (मातहत) कर्मचारी, ग़ुलामों और नौकरों की तरफ़ से अज़ाब कि वे विश्वासघाती और बेईमान हो जायें।

६८. और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में कुरेद कर रहे हैं तो उन लोगों से अलग हो जायें, यहाँ तक कि वह दूसरे काम में लग जायें और अगर आप को शैतान भुला भी दे, तो याद आने के बाद फिर ऐसे ज़ालिम लोगों के साथ मत बैठें।[1]

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (68)

६९. और जो लोग परहेज़गारी रखते हैं उन पर उन के पकड़ का कोई असर नहीं होगा, और लेकिन उन के हक़ में तालीम देना है, शायद वे भी परहेज़गारी रखने लगें।

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِم مِّن شَيْءٍ وَلَٰكِن ذِكْرَىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ (69)

७०. और ऐसे लोगों से कभी भी रिश्ता न रखें जिन्होंने अपने दीन को खेल बना रखा है और दुनियावी ज़िन्दगी ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और इस क़ुरआन के ज़रिये तालीम भी देते रहें ताकि कोई इंसान अपने अमल के सबब इस तरह न फंस जाये कि कोई अल्लाह के सिवाय उसकी न मदद करने वाला हो और न सिफ़ारिश करने वाला और यह हालत हो कि अगर दुनिया भर के बदले दे डाले तब भी उसे न लिया जाये। वे ऐसे ही हैं कि अपने अमलों के सबब फंस गये, उन के लिए बहुत गर्म पानी पीने के लिए होगा और दुखदायी सज़ा होगी उन के कुफ़्र के सबब।

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ وَذَكِّرْ بِهِ أَن تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ وَإِن تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۖ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ (70)

---

[1] इस आयत में अगरचे ख़िताब नबी ﷺ को किया गया है, किन्तु इस से सम्बोधित (मुख़ातिब) हर मुसलमान है, यह अल्लाह का बलपूर्वक (ताकीदी) हुक्म है जिसे पाक क़ुरआन में कई मुक़ामों में बयान किया गया है। सूर: निसाअ आयत नं॰ १४० में भी इस विषय की चर्चा आ चुकी है, इस से हर ऐसी मजलिस मुराद है जिस में अल्लाह और रसूल के हुक्मों का मज़ाक़ किया जाता हो या व्यवहारिक (अमली) रूप से उनकी नाफ़रमानी की जाती हो या गुमराह अपनी गलत विचारों के ज़रिया आयात (पाक क़ुरआन के मंत्रों) के मायनों को छिन्न-भिन्न कर रहे हों, ऐसी मजलिसों में आलोचना (तन्क़ीद) और सच की मदद के लिये जाना जायेज़ है वर्ना बहुत बड़े गुनाह और अल्लाह के ग़ज़ब का सबब है।

७१. आप कहिए कि क्या हम अल्लाह के सिवाये उसे पुकारें जो हमारा भला-बुरा न कर सकता हो और अल्लाह की हिदायत मिलने के बाद उस के समान एड़ियों के बल फेर दिये जायें जैसे शैतान ने बहका दिया हो और वह धरती में भटकता फिर रहा हो, उस के साथी उसे सही रास्ते की ओर पुकार रहे हों कि हमारे पास आओ ।[1] आप कहिये कि अल्लाह की हिदायत ही हक़ीक़त में हिदायत है और हमें हुक्म किया गया है कि दुनिया के मालिक के लिए खुदसिपुर्दगी कर दें ।

قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۗ وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿71﴾

७२. और नमाज़ क़ायम करो और उस (अल्लाह) से डरो, वह वही है जिस की तरफ़ तुम जमा किये जाओगे ।

وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ۚ وَهُوَ الَّذِىْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿72﴾

७३. उसी ने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, और जिस दिन कहेगा "हो जा" तो हो जायेगा, उसका क़ौल सच है और जिस दिन नरसिन्घा फूंका जायेगा, मुल्क सिर्फ़ उसी का होगा, वह जानने वाला है, ग़ैब और हाज़िर का और वह हिक्मत वाला बाख़बर है ।

وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۚ قَوْلُهُ الْحَقُّ ۗ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ ۗ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿73﴾

७४ और याद करो जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र[2] से कहा क्या आप मूर्तियों को माबूद बना रहे हैं? मैं आप को और आप की क़ौम को खुली गुमराही में देख रहा हूँ ।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّىْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿74﴾

---

[1] यह उन लोगों की मिसाल है जो ईमान के बाद बेईमान और एकेश्वरवाद के बाद अनेकेश्वरवाद की ओर फिर जायें, उनकी मिसाल ऐसी ही है कि वह अपने साथियों से बिछड़ कर जंगलों में चकित हो कर परेशानी की हालत में भटकता फिर रहा हो, साथी उस को बुला रहे हों लेकिन चकित होने के वजह से कुछ न दिखायी पड़ रहा हो या जिन्नातों के पंजे में फंसने के सबब सही रास्ते पर आना नामुमकिन हो ।

[2] इतिहासकार हज़रत इब्राहीम के बाप के दो नाम बताते हैं, यह नाम आज़र और तारूख़ हैं, मुमकिन है कि दूसरा नाम उपाधि (लक़ब) हो । कुछ कहते हैं कि आज़र आप के चचा का नाम था, लेकिन यह सही नहीं है, इसलिए कि क़ुरआन ने आज़र की चर्चा हज़रत इब्राहीम के पिता के रूप में की है, इसलिए सही [illegible]ही है ।

७५. और इसी तरह हम ने इब्राहीम को आसमानों और जमीन का मुल्क (राज्य) दिखायी ताकि वह पूरे यकीन करने वालों में हो जायें।

وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿75﴾

७६. फिर जब उन पर रात का अंधेरा छा गया तो एक तारा देखा, कहा कि यह मेरा रब है फिर जब वह डूब गया तो कहा कि मैं डूबने वाले से मुहब्बत नही करता।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿76﴾

७७. फिर जब चाँद को चमकते देखा तो कहा यह मेरा रब है, फिर जब वह डूब गया तो कहा कि अगर मेरे रब ने मुझे रास्ता नही दिखाया तो मैं गुमराहों में हो जाऊँगा।

فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَىِٕنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿77﴾

७८. फिर जब सूरज को चमकता हुआ देखा तो कहा कि यह मेरा रब है, यह तो सब से बड़ा है, फिर जब वह डूब गया तो कहा कि बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से बरी हूं।[1]

فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿78﴾

७९. मैंने अपना मुंह उसकी तरफ फेर दिया, जिस ने आसमानों और जमीन को पैदा किया यकसू होकर और मैं मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से नही हूं।

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿79﴾

८०. और उन से उनकी कौम वालों ने झगड़ा करना शुरू कर दिया[2] आप (हजरत इब्राहीम) ने कहा कि क्या तुम अल्लाह के बारे में मुझ से झगड़ा करते हो, अगरचे उस ने मुझे हिदायत दी है और मैं उन चीजों से जिन को तुम अल्लाह के

وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ۭ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۭ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ۭ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿80﴾

[1] यानी वह सभी चीजे जिन को अल्लाह का साझी बनाते या जिन की पूजा करते हो, उस से मैं दुखी हूं, इसलिए कि इन में तबदीली होती है, कभी निकलते हैं कभी डूबते हैं, जो इस बात का सुबूत है कि इनकी तखलीक हुई है और उनका बनाने वाला कोई और है जिसके आदेशाधीन (ताबे) ये हैं।

[2] जब कौम वालों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) का यह भाषण सुना जिस में उन के (खुद बनाये) देवताओं का खण्डन (तरदीद) भी किया गया था, तो उन्होंने भी अपनी दलील पेश करना शुरू कर दिया, जिस से मालूम हुआ कि मूर्तिपूजकों ने भी अपने ईमान के लिए कुछ दलील बना रखी थी, जिसको आज भी देखा जा सकता है, जितने भी शिर्क करने वाले लोग है, सभी ने अपने-अपने पैरोकारों को मुतमइन करने के लिए ऐसे माहिर खोज रखे है जिन्हें वे दलील समझते है या जिनसे कम से कम उनके पैरोकारों को अपने जाल में फसाये रख सकते हैं।

साथ शामिल करते हो, नहीं डरता लेकिन यह कि मेरा रब ही किसी वजह से चाहे। मेरा रब हर चीज को अपने इल्म के दायरे में घेरे हुए है, क्या तुम फिर भी ख़्याल नहीं करते?

وَكَيْفَ أَخَافُ مَآ أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِٱللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِۦ عَلَيْكُمْ سُلْطَٰنًا ۚ فَأَىُّ ٱلْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِٱلْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ (81)

८१. और मैं उस चीज से कैसे डरूं जिसे तुम ने (अल्लाह का) साभीदार बना लिया, जबकि तुम उसे अल्लाह का साभी बनाने से नहीं डरते जिस का तुम्हारे पास अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी है, फिर इन दोनों गिरोहों में कौन हक़ के ज़्यादा लायक़ है, अगर तुम इल्म रखते हो।

ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَلَمْ يَلْبِسُوٓا۟ إِيمَٰنَهُم بِظُلْمٍ أُو۟لَٰٓئِكَ لَهُمُ ٱلْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ (82)

८२. जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को किसी शिर्क से लिप्त नहीं किया उन्हीं के लिए अमन है और वही सीधे रास्ते पर हैं।[1]

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ ءَاتَيْنَٰهَآ إِبْرَٰهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِۦ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَٰتٍ مَّن نَّشَآءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ (83)

८३. और यह हमारी दलील है जिसे हम ने इब्राहीम को उन के क़ौम के मुक़ाबले में दिया, हम जिसका पद चाहें बढ़ाते हैं, बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला इल्म वाला है।

وَوَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۖ وَمِن ذُرِّيَّتِهِۦ دَاوُۥدَ وَسُلَيْمَٰنَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِى ٱلْمُحْسِنِينَ (84)

८४. और हम ने उन्हें (पुत्र) इसहाक़ और (पौत्र) याक़ूब अता किया, और हर को सीधा रास्ता दिखाया, और इस से पहले नूह को रास्ता दिखाया और उन की औलाद में दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को, और इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला अता करते हैं।

---

[1] आयत में यहाँ ज़ुल्म से मुराद शिर्क है, जब यह आयत उतरी तो अल्लाह के रसूल के सहाबा ने इस का आम मतलब (सुस्ती, बुराई, गुनाह, क्रूरता वग़ैरह) समझा और परेशान हो गये, रसूलुल्लाह ﷺ की ख़िदमत में आ कर कहने लगे कि हम में कौन है जिस ने ज़ुल्म न किया हो? आप ने कहा कि इस का मतलब वह ज़ुल्म नहीं जो तुम ने समझा है बल्कि इस से मुराद शिर्क (मिश्रण) है, जैसे हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे से कहा था।

﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾

बेशक शिर्क सबसे बड़ा ज़ुल्म है। (सूर: लुक़मान-१३, सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अल-अंआम)

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿85﴾

८५. और ज़करिया और यहया और ईसा [1] और इलियास को, सब सालेहीन में थे।

وَإِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿86﴾

८६. और इस्माईल और यसअ और यूनुस और लूत को, सब को हम ने दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी।

وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿87﴾

८७. और उन के बापों और औलादों और भाईयों में से, और हम ने उनका इन्तिख़ाब किया और उन्हें सीधा रास्ता दिखाया।

ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ وَلَوْ أَشْرَكُوا لَحَبِطَ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿88﴾

८८. यही अल्लाह का रास्ता है अपने बंदों में से जिसे वह चाहता है, उसे राह दिखाता है और अगर वे लोग भी शिर्क (मिश्रण) करते तो उन के अमल बेकार हो जाते।[2]

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَإِن يَكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكَافِرِينَ ﴿89﴾

८९. इन्हीं को हम ने किताब और हिक्मत और नुबूवत अता किया, और अगर यह लोग इसे न मानें[3] तो हम ने ऐसे लोगों को तैयार कर रखा है जो इसका इंकार नहीं करेंगे।[4]

---

[1] ईसा ﷺ का बयान हज़रत नूह या इब्राहीम की औलाद में इसलिए किया गया है (अगरचे उन के बाप नहीं थे) कि लड़की की औलाद भी मर्द के औलाद में शामिल होती है, जिस तरह से नबी ﷺ ने हज़रत हसन (رضي الله عنه) [अपनी बेटी हज़रत फ़ातिमा (رضي الله عنها) के बेटे] को अपना बेटा बताया «إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ وَلَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ» (सहीह बुख़ारी किताबुस सुलह) तफ़सीली जानकारी के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर)

[2] अट्ठारह नबियों के नामों का बयान कर के अल्लाह तआला कह रहा है, अगर वे लोग भी शिर्क में फंस जाते तो उन के सारे अमल बरबाद हो जाते, जिस तरह से नबी ﷺ को दूसरी जगह पर मुख़ातब करते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ﴾

"हे पैग़म्बर अगर तूने भी अल्लाह तआला के साथ किसी दूसरे को शामिल किया, तो तेरे सारे अमल बरबाद कर दिये जायेंगे।" (सूर: अज़-ज़ुमर-६५)

अगरचे पैग़म्बरों से शिर्क होना मुमकिन नहीं, मक़सद पैरोकारों को शिर्क की भयानकता और तबाही से बाख़बर करना है।

[3] इस से मुराद रसूलुल्लाह ﷺ के मुख़ालिफ़, मूर्तिपूजक और बेदीन हैं।

[4] इस से मुराद मक्का से जाकर मदीने में बसने वाले और मदीने के वासी मुसलमान और क़यामत तक आने वाले ईमान वाले हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ ۗ قُل لَّا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْعَالَمِينَ (90)

९०. यही लोग है जिन को अल्लाह ने सही रास्ता दिखाया, इसलिए आप उन के रास्ते की पैरवी करें, आप कहिये कि मैं इस पर किसी बदले की मांग नहीं करता, यह दुनिया वालों के लिये सिर्फ़ यादगार है।

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ ۗ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَىٰ نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ ۖ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا ۖ وَعُلِّمْتُم مَّا لَمْ تَعْلَمُوا أَنتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ (91)

९१. और उन्हें जिस तरह अल्लाह की क़द्र करना चाहिए था क़द्र नहीं किया, जब उन्होंने यह कहा कि अल्लाह ने किसी इंसान पर कुछ नहीं उतारा। आप कहिये कि मूसा जो किताब तुम्हारे पास लाये जो लोगों के लिए नूर और हिदायत है, उसे किस ने उतारा जिसे तुम मुख़्तलिफ़ काग़ज़ों में रखते हो,[1] जिस में से कुछ ज़ाहिर करते और ज़्यादातर छुपाते हो और तुम्हें वह इल्म दिया गया जिसे तुम और तुम्हारे बुज़ुर्ग नहीं जानते थे। आप कहिए कि अल्लाह फिर उन्हें उन के कुरेद में खेलते छोड़ दीजिए।

وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَهُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ (92)

९२. और यह भी एक मुबारक किताब है, जिसे हम ने उतारा है, अपने से पहले (धर्मशास्त्रों) की तसदीक़ है, ताकि आप असल बस्ती (मक्का) और उस के आसपास (के नगरों यानी पूरी इंसानी दुनिया) को बाख़बर करें, और जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं वही लोग इसे मानेंगे और वही अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करेंगे।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا

९३. और उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम लगाये या कहे कि मेरी तरफ़ वह्यी आई है, जबकि उस की तरफ़ कुछ नहीं आयी, और जिस ने कहा कि जिस तरह अल्लाह ने उतारा मैं भी उतारूंगा, अगर आप ज़ालिमों को मौत के सख़्त अज़ाब में देखेंगे, जब फ़रिश्ते अपने हाथ लपकाये होते हैं

[1] आयत की तफ़सीर के अनुसार अब यहूदियों को मुख़ातब कर के कहा जा रहा है कि तुम इस किताब को विभिन्न पृष्ठों (मुख़्तलिफ़ पन्नों) में रखते हो, जिन में से जिन को चाहते हो ज़ाहिर करते हो जिनको चाहते हो छिपा लेते हो, जैसे पत्थरों से मार कर सज़ा देने का क़ानून और नबी ﷺ के अवसाफ़ की बात है।

أَنفُسَكُمُ ۖ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ (93)

कि अपनी जान निकालो, आज तुम्हें अल्लाह पर नाहक़ इल्ज़ाम लगाने और तकब्बुर से उस की आयतों का इंकार करने के सबब अपमानकारी (रुस्वाकुन) बदला दिया जायेगा।

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ (94)

९४. और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गये, जैसे तुम्हें पहली बार पैदा किया और तुम्हें जो दिया उसे अपने पीछे छोड़ आये और तुम्हारे सिफ़ारिशी हमें नहीं दिख रहे हैं, जिन को तुम अपने कामों में हमारा साझी समझ रहे थे, बेशक तुम्हारे संबन्ध कट गये और तुम्हारा ख़्याल तुम से खो गया।

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ (95)

९५. अल्लाह ही बीजों और गुठलियों को फाड़कर कोपल निकालता है,[1] वह जानदार को बेजान से बेजान को जानदार से निकलता है, वही अल्लाह है, फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो ?

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ (96)

९६. वह पौ फाड़ने वाला है और उस ने रात को आराम के लिये सूरज और चाँद को हिसाब लगाने के लिये बनाया, यह ठहराई बात है ज़बरदस्त इल्म वाले (अल्लाह) का।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ (97)

९७. और उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये ताकि तुम थल जल के अंधेरों में उन के ज़रिये रास्ते का पता लगाओ,[2] हम ने उन लोगों के

---

[1] यहाँ से अल्लाह तआला की बेइन्तेहा ताक़त और क़ुदरत का बयान शुरू हो रहा है। फ़रमाया: अल्लाह तआला दाने और गुठली को, जिसे किसान धरती के अन्दर दबा देता है, उसे फाड़ कर अनेक रंग-रूप के पेड़ उगाता है, धरती एक होती है, पानी भी जिस से खेतों की सिचाई होती है, एक ही तरह का होता है, लेकिन जिस-जिस चीज़ के वे दाने और गुठलियाँ होते हैं, उन के अनुसार अल्लाह तआला उन से कई तरह के अनाज और फलों के पेड़ उगाता है, क्या अल्लाह के सिवाय दूसरा कोई है जो इस काम को करता है या कर सकता है ?

[2] यहाँ सितारों का एक फ़ायेदा और मक़सद बताया गया है और इस के दूसरे और भी दो मक़सद हैं जो दूसरी जगह पर बयान किये गये हैं। आकाशों की शोभा (ज़ीनत) और शैतानों की सज़ा, यानी अगर शैतान आसमान पर जाने की कोशिश करते हैं तो यह उन पर अंगारे बन कर गिरते हैं, कुछ सलफ़ का क़ौल है, "इन तीन बातों के सिवाय इन सितारों के बारे में यदि कोई इंसान ईमान रखता हो तो वह ग़लती पर है और अल्लाह पर झूठ बाँधता है।"

इस से मालूम होता है कि हमारे देश में जो ज्योतिष विज्ञान (इल्मे नुजूम) की चर्चा है, जिस में

लिए निशानियों को बयान कर दिया है जो इल्म रखते हैं।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ۭ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ (98)

९८. और उसी ने तुम्हें एक जान से पैदा किया फिर तुम्हारा एक दायमी और एक समर्पण (आरज़ी) जगह है,[1] हम ने उन के लिये निशानियों (लक्षणों) का बयान कर दिया है जो समझते हैं।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (99)

९९. और वही है जिस ने आसमान से बारिश बरसाई, फिर हम ने उस से हर तरह के पौधे उगाये, फिर उस से हरियाली निकाली जिस से हम गुथे हुये अनाज और खजूर के गाभ से लटकते हुये गुच्छे और अंगूरों और जैतून और अनार के बाग़ (उद्यान) निकलते हैं जो एक तरह और अनेक तरह होते हैं, उन के फलों को देखो जब फलें और उनका पकना, बेशक इस में उन लोगों के लिये चिन्ह (निशानियाँ) हैं जो ईमान रखते हैं।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَاۗءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ (100)

१००. और लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझी बना दिया है, जबकि उसी ने उन को पैदा किया है, और उस (अल्लाह) के लिये बेटे और बेटियाँ गढ़ लीं बिना किसी इल्म के, वह (अल्लाह) इन के बयान किये अवसाफ़ से पाक और (अच्छा) है।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ۭ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (101)

१०१. यह आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, उस के औलाद कहाँ हो सकती है? जब कि उसकी कोई बीवी नहीं है वह हर चीज़ का बनाने वाला[2] और जानने वाला है।

सितारों के ज़रिये मुस्तक़बिल के वाक़ेआत और इंसान की ज़िन्दगी या दुनिया में उन के असर का दावा किया जा रहा है, वह बेकार है और इस्लामी क़ानून के ख़िलाफ़ भी, इसलिए एक हदीस में इसे जादू का ही एक हिस्सा बताया गया है।

[1] ज़्यादातर व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) के ख़्याल से مُستقر (मुस्तक़र) से गर्भाशय (रिहम) और مُستودع से बाप की पीठ मुराद है। (फ़तहुल-क़दीर और इब्ने कसीर)

[2] यानी जैसे अल्लाह सभी उपर बयान चीज़ें पैदा करने में अकेला है, कोई उसका साझी नहीं उसी तरह वह इस लायक़ है कि उस की अकेले इबादत की जाये किसी और को उसकी इबादत में शामिल न किया जाये, लेकिन लोगों ने एक अकेले को छोड़कर अनेकों को उसका

१०२. वही अल्लाह तुम्हारा रब है, उस के सिवाये कोई माबूद नहीं, हर चीज का बनाने वाला है, इसलिए उसी की इबादत करो और वह हर चीज का निगराँ है।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿102﴾

१०३. आँखें उसे देख नहीं सकतीं और वह सभी निगाहों को देखता है और वह गहराई से देखने वाला सर्वसूचित (बाख़बर) है।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿103﴾

१०४. तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारे पास दलील आ गई है, तो जो देखेगा वह अपने भले के लिये (देखेगा) और जो अंधा बन जायेगा वह अपना बुरा करेगा और मैं तुम्हारा मुहाफ़िज नहीं हूँ।

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿104﴾

१०५. इसी तरह हम आयतों (पाक क़ुरआन की) को फेर-फेर कर बयान कर रहें हैं ताकि वे कहें कि आप ने पढ़ा है और ताकि उन लोगों के लिये जो जानते हैं हम उसे अच्छी तरह बयान कर दें।

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿105﴾

१०६. आप अपने रब के हुक्म (वहयी) की इत्तेबा करें कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं और मुश्रिकों से विमुख हो जायें।

اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿106﴾

१०७. और अगर अल्लाह चाहता तो यह शिर्क (अल्लाह के साझीदार) न करते[1] और हम ने आप को इन लोगों का निगराँ नहीं बनाया, और

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿107﴾

साझी बना रखा है जब कि वह ख़ुद अल्लाह की तख़लीक़ है। मुश्रिक इबादत तो मूर्तियों या क़ब्रों में गड़ी लाश की करते हैं, लेकिन कहा गया है कि उन्होंने देवों को अल्लाह का साझी बना रखा है, हक़ीक़त में देवों से मुराद शैतान हैं और उन्ही के कहने पर शिर्क किया जाता है, इसलिए मानो कि उन्हीं की इबादत की जाती है, इस बारे में पाक क़ुरआन में कई जगहों पर बयान किया गया है। (मिसाल के तौर पर सूर: निसाअ-११७, सूर: मरियम-४४, सूर: यासीन-६०, सूर: सबा-४१)

[1] इस नुक्ता की वजाहत पहले की जा चुकी है कि अल्लाह की मर्ज़ी दूसरी चीज है और उसकी ख़ुशी तो इसी में है कि उसके साथ किसी को शामिल न किया जाये, फिर भी इंसान को इस पर मजबूर नहीं किया है क्योंकि मजबूरी से इंसान का इम्तेहान न हो पाता, बल्कि अल्लाह तआला के पास तो ऐसी ताक़त है कि वह चाहे तो कोई इंसान शिर्क करने की ताक़त ही नहीं रख सके। (फिर देखिये सूर: अल-बक़र:-२५३ और सूर:अल-अंआम ३५ की तफ़सीर)

न आप उन पर हक रखने वाले हैं ।[1]

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ كَذَٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِم مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿108﴾

१०८. और जो अल्लाह के सिवा दूसरों को पुकारते हैं उन को गाली न दो नही तो दुश्मन होकर अंजाने वे अल्लाह को गाली देंगे,[2] इसी तरह हम ने हर उम्मत के लिये उन के अमल को सुशोभित (मुजय्यन) बना दिया है, फिर उन्हें अपने रब की ओर ही लौटना है, इसलिए वह उन्हें उस से बाख़बर करेगा जो वे करते रहे ।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ ۖ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿109﴾

१०९. और उन्होंने बलपूर्वक अल्लाह की क़सम खाई कि उन के पास कोई निशानी आई[3] तो बेशक मान लेंगे, आप कहिये कि आयतें अल्लाह के पास हैं और आप को क्या पता कि वह (निशानियाँ) आ जायें तब भी वह नहीं मानेंगे ।

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿110﴾

११०. और हम उन के दिलों और आँखों को फेर देंगे जिस तरह उन्होंने पहले इस के ऊपर यक़ीन नहीं किया, और उनको उनकी सरकशी (के अँधेरे) में भटकता रहने देंगे ।

---

[1] यह विषय भी क़ुरआन मजीद में कई जगहों पर बयान किया गया है, मक़सद नबी ﷺ की दावती मंसब और बाख़बर करने वाली पदवी की वज़ाहत हैं जो रिसालत की माँग है और आप ﷺ केवल इसी हद तक ज़िम्मेदार थे, इस से ज़्यादा आप के पास अगर हक होते तो आप ﷺ अपने प्यारे चाचा अबू तालिब को ज़रूर मुसलमान कर लेते, जिन के दीन इस्लाम को क़ुबूल करने की आप बहुत तमन्ना रखते थे ।

[2] यह निषेध की विधि के इस क़ानून पर आधारित (मबनी) है कि अगर किसी जायेज़ काम से उस से बड़ी ख़राबी पैदा होती हो तो वहाँ पर जायेज़ को न करना ठीक और है, इस तरह नबी ﷺ ने भी फ़रमाया है कि तुम किसी के माँ-बाप को गाली मत दो कि इस तरह तुम ख़ुद अपने माँ-बाप की गाली का वजह बन जाओगे । (सहीह मुस्लिम, किताबुल-ईमान, बाब बयानुल कबायर व अकबरिहा) इमाम शौकानी लिखते हैं कि मुमानअत के तरीक़ा का यह मूलाधार है । (फ़तहुल क़दीर)

[3] यानी कोई बड़ा मोजिज़ा जो उनकी मर्ज़ी से हो, जैसे मूसा की छड़ी, मुर्दा को जिन्दा और समूद की ऊँटनी जैसा ।